

SAWI AWARENESS (NEWS)

SEARCH



बचपन से पड़
रहे थे मिर्गी के
दौरे मेदान्ता
लखनऊ के
डॉक्टरों ने
कठिन सर्जरी से
की जिन्दगी
आसान

February 08, 2021



SHARE

बचपन से पड़ रहे थे मिर्गी के दौरे मेदान्ता लखनऊ के डॉक्टरों ने कठिन सर्जरी से की जिन्दगी आसान

लखनऊ, 8 फरवरी 2021:
वर्ल्ड एपिलेप्सी डे के ठीक
पहले मेदांता हॉस्पिटल
लखनऊ के डॉक्टरों की
टीम ने एक 19 वर्षीया
किशोरी को मिर्गी के दौरे
से निजात दिला दी।

मिर्गी से पीड़ित किशोरी
का सफल ऑपरेशन करने
वाले मेदांता में इंस्टिट्यूट
ऑफ़ न्यूरो साइंसेज में
एसोसिएट डायरेक्टर न्यूरो
सर्जरी, डॉ रवि शंकर ने
बताया कि, "मरीज़ बचपन

से ही मिर्गी से पीड़ित थी।
 अक्सर पड़ने वाले मिर्गी के
 दौरों का प्रभाव उसके
 शरीर और मन, मस्तिष्क
 पर बहुत नकरात्मक पड़ा
 था। उसे दवाइयों के सहारे
 अपना जीवन व्यतीत करना
 पड़ रहा था। वह बार-बार
 बेहोश होने और गिरने की
 परेशानी से जूझ रही थी।
 इसके चलते किसी न
 किसी परिजन को उसकी
 निगरानी करनी पड़ती थी।
 यह मरीज और परिवार
 दोनों के लिए बहुत
 कष्टकारी दौर रहा।

जैसा कि हम सभी जानते हैं
 कि मिर्गी के मरीज के
 परिजन अज्ञानता की वजह
 से मिर्गी से जुड़ी भ्रांतियों
 पर आँख मूँद कर विश्वास
 कर लेते हैं और सही
 इलाज न करा कई बार
 तात्कालिक और तांत्रिकों के

चक्कर में फंस जाते हैं।
 ऐसे में मरीज न केवल
 शारीरिक और मानसिक
 यंत्रणा से गुजरता है बल्कि
 कई बार वह समाज से
 पूर्णतया अलग-थलग पड़
 जाता है।

मेदान्ता लखनऊ के
 इंस्टिट्यूट ऑफ
 न्यूरोसइनेस के न्यूरोलॉजी
 डायरेक्टर, डॉ अनूप
 कुमार ठक्कर ने मिर्गी के
 रोगियों के बारे में बताते
 हुए कहा कि, "दुनिया भर
 में मिर्गी के जितने मरीज हैं
 उनमें से करीब 16 फीसदी
 मरीज अकेले भारत में हैं।
 दुनिया भर में मिर्गी के
 मरीजों की संख्या लगभग
 सात करोड़ हैं और उनमें
 से तकरीबन सवा करोड़
 अकेले भारत में हैं। इतनी
 बड़ी संख्या होने के
 बावजूद सही जानकारी न

होने के चलते मिर्गी के ज्यादा मरीजों को सही उपचार नहीं मिल पाता। 90 फीसदी मिर्गी के मरीजों का इलाज सही दवाइयों से हो जाता है लेकिन 10 फीसदी मरीजों को सर्जरी की आवश्यकता पड़ती है। सर्जरी के लिए भी काफी उन्नत किस्म की विशेषज्ञता और उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। सर्जरी के बाद मरीज को दवाइयां लेने की जरूरत ना के बराबर या बिलकुल भी नहीं रह जाती।"

मेदान्ता लखनऊ के इंस्टिट्यूट ऑफ न्यूरोसइनेस के सीनियर कंसल्टेंट, डॉ ऋत्विज बिहारी ने मिर्गी के रोगियों के साथ बरती जाने वाले सावधानियों के बारे में बताते हुए कहा कि "जब

तो उसके हाथ-पैर को पकड़ने की कोशिश बिलकुल न करें क्योंकि दौरें के समय लगने वाले झटके बहुत शक्तिशाली होते हैं और ऐसे में हाथ-पैर पकड़ कर झटके रोकने की कोशिश में मरीज़ को चोट लग सकती है। दौरें के समय मरीज़ को करवट के बल लिटा दें, इससे मुंह में जो झाग बन रहा है वो सीधे बाहर गिरेगा और सांस की नाली जा कर खतरा नहीं पैदा करने पाएगा। दौरें के समय मरीज़ अपना जबड़ा भी चबाने लगता है, इसलिए कोई सुरक्षित चीज उसके दांतों के बीच रख दें ताकि मरीज़ अपनी जुबान को क्षति न पहुंचाने पाए। भूलकर भी मरीज़ को जूते,

चप्पल सूंघने जैसे उपाय न करें। दौरे के समय मरीज कुछ भी निगलने की स्थिति

में नहीं होता, इसलिए ज़बरदस्ती उसके मुंह में दवा या पानी डालने की ज़बरदस्ती न करें। दौरा रुकते ही मरीज को फौरान डॉक्टर के पास ले जाएं।

डॉ रवि शंकर ने बताया कि पुरे देश में कुछ ही चिकित्सा संस्थानों में ये सुविधा उपलब्ध है। इनमें से एक मेदान्ता लखनऊ है। मेदान्ता ग्रुप के सीएमडी डॉ नरेश त्रेहन, मेदान्ता लखनऊ के डायरेक्टर डॉ राकेश कपूर का उन पर उनकी टीम पर भरोसा जताने, निरंतर उत्साहवर्धन और प्रेरणा स्रोत बने रहने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने इस सफल सर्जरी के लिए न्युरोलोजी

विभाग की अपनी टीम में शामिल डॉ ए के ठक्कर, डॉ प्रमोद, डॉ सतीश, डॉ अमितेश, डॉ शैलेश सहित सर्जरी में सहयोग करने वाले पैरा-मेडिक स्टाफ और ओटी टेक्नी शियंस को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि एपिलेप्सी यानि मिर्गी की सर्जरी एक जटिल प्रक्रिया है और एक संगठित और कुशल टीम ही इसको सफलता पूर्वक अंजाम दे सकती है और उनके सीनियर्स और जूनियर्स ने इस टीम वर्क को बखूबी निभाया और मरीज को एक नई जिन्दगी दी है।



SHARE

Comments

Enter your comment